BEHAVIOURAL GEOGRAPHY

भूगोल में मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापों के अध्ययन का विशेष महत्व होता है। फलस्वरूप भूगोल सामाजिक विज्ञानों में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल रहा है, लेकिन इसके विधितंत्र तथा लक्ष्यों को लेकर कोरे असंतोष के कारण 1960 के दशक में भूगोल के विषय में क्रांतिकारी परिवर्तन आए तथा आचारपरक दृष्टिकोण को महत्व दिया जाने लगा। इस क्रांति ने मानव तथा वातावरण प्रणाली को समझने में नवीन तथा विस्तृत दृष्टि प्रदान की है। इसमें मानवीय बोध व्यवहार, वातावरण संबंधी निर्णय, क्षेत्रीय अंर्तसंबंध आदि पर बल दिया जाता है। मनुष्य का वातावरण के साथ व्यवहार इस तथ्य पर निर्भर करता है कि वह अपने वातावरण को किस प्रकार अनुभव करता है। इस प्रकार स्पष्ट रूप से मानव तथा वातावरण से संबंधित नवीन अवधारणा का जन्म हुआ।

इस प्रकार "आचरण या व्यवहारिक भूगोल, भूगोल की वह विचारधारा है जो मनुष्य को विभिन्न या सामान्य वातावरण में सम्पन्न भौगोलिक परिघटनाओं का अनुभव, ज्ञान और अभिग्रहण के उपरांत उत्पन्न हुए आत्मबोध, चिन्तन और कार्यान्वयन से संबंधित है।

HISTORICAL BACKGROUND: —

आचरण भूगोल का व्यवस्थित विकास 1960 के दशक से ही प्रारंभ हुआ। लोवेनथॉल, गॉलेज, एवेन्सर, पीटर गोल्ड, वाल्वर्ड, रॉबर्ट, केनेथ आदि विद्वानों ने इसके विकास में एवं इसे इसे विस्तृत विकसित शाखा के रूप में स्वीकार कर इस

चिन्तन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। मानव आचरण की विशद व्याख्या सर्वप्रथम काण्ट ने 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रस्तुत किया जबकि 19वीं सदी के अंतिम दशक में फ्रांसीसी विद्वान रेक्लस ने इस बिंदु को दृढ़ता पूर्वक उठाया कि मानव पर्यावरण संबंधों में मानव एक निष्क्रीय कारक नहीं है। वर्तमान में आचरण भूगोल का संबंध मानव की आर्थिक, सामाजिक, आवासीय, व्यक्तिगत एवं अन्य समस्याओं के निवारण हेतु तथ्यात्मक चिंतनो द्वारा माना गया है। इस प्रकार वर्तमान में आचरण भूगोल के आधार क्रम है —

(i) मस्तिष्क चिंतन द्वारा प्राप्त उपलब्धि
(ii) इससे मानस पटल पर निर्मित संरचना तथा
(iii) उसके अनुसार मानवीय आचरण है।

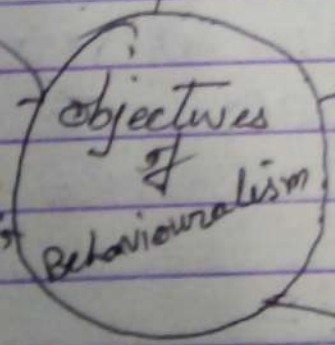

Objectives of Behaviouralism :—

Mental map / Image :-

व्यवहारिक भूगोल की विचारधारा मनो- मनोविज्ञान से संबंधित है जिसमें यह माना जाता है कि मनुष्य अपने वातावरण में रहते हुए अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा वातावरणीय सूचनाएँ अभिग्रहण करता है। Peter Gold द्वारा "Mental map" की व्याख्या के बाद इसकी उपयोगिता एवं प्रसिद्ध में निरंतर वृद्धि हुई। गोल्ड के अनुसार मानव मस्तिष्क पर उसकी क्रिया निम्न प्रतिरूप में रहती है जो Black box की भाँति व्यवहार करती है।

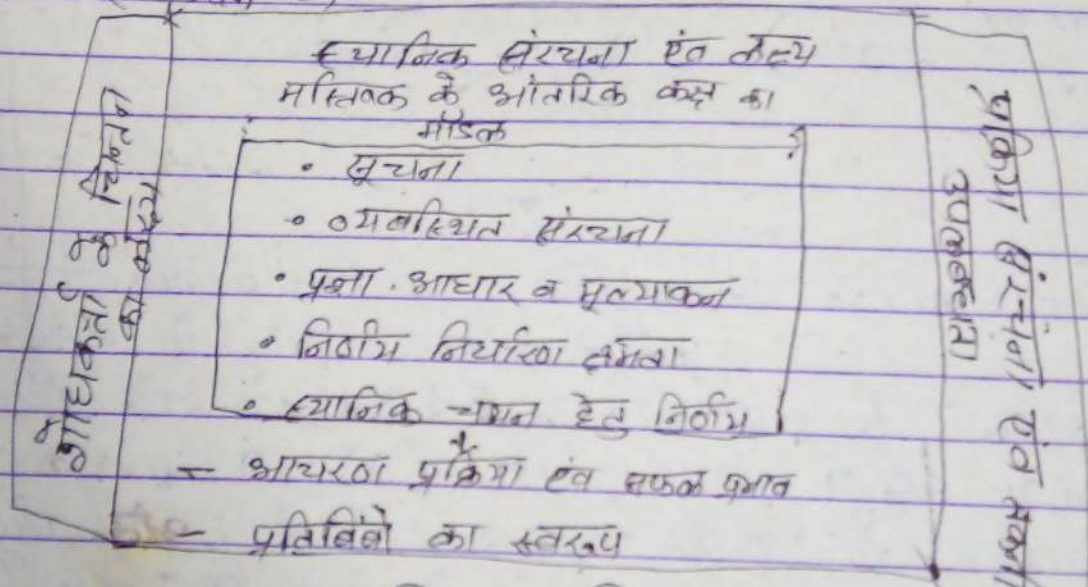

(मानव मस्तिष्क चित्र, गोल्ड के अनुसार)

~~इस प्रक~~ इस प्रकार मानवीय चिन्तन, मस्तिष्क में प्रवेश करता है तथा मस्तिष्क की संवेदनशील एवं विश्लेषणों की क्षमता के अनुसार प्रत्येक चिन्तन को प्रभावित कर स्वयं के निर्णय सहित पुनः बाहर कर देता है। मानव मस्तिष्क के अंतः कक्ष में कोई भी चिन्तन के लिए सदा नहीं रह सकता।

मानव अपने चारो ओर और सतिकर परिवर्तन के बारे में मस्तिष्क में जो संरचना निर्मित करता है वह विविध पहलु, विशेष लक्षण और कारको से प्रभावित एवं संबंधित रही है।

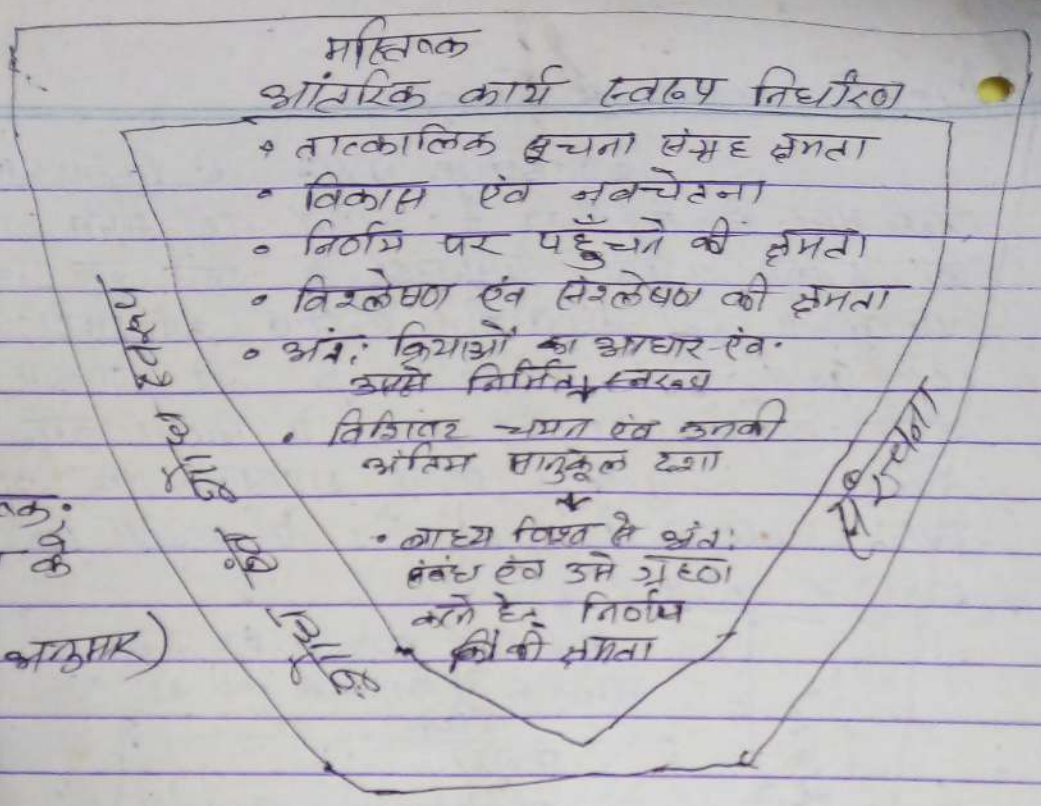

मानव मस्तिष्क: बाह्य विश्व के आचरण (गोल्ड के अनुसार)

* Environment Perception & Behaviour:—

प्रत्येक मानव मस्तिष्क में अपने निकटवर्ती वातावरण के प्रति निश्चित प्रतिबिंब बने रहते हैं। उसके निर्णय, समस्या अथवा परिस्थितियों का मूल्यांकन ऐसे प्रतिबिंब से पूर्णत: प्रभावित रहते हैं। अत: निर्णय लेते वक्त समय वह दृश्यमान तथ्यों के साथ-साथ Mental image से प्रभावित स्वरूप को भी विशेष महत्व देता है।

MAN - ENVironmental Relation

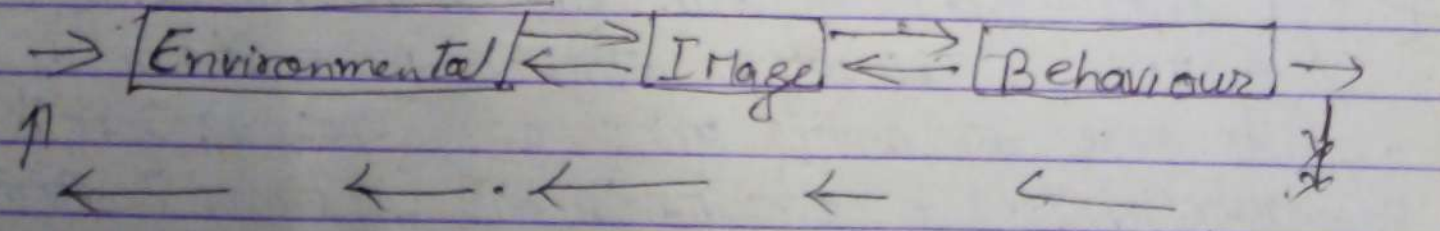

→ [Environmental] ⇄ [Image] ⇄ [Behaviour] →
↑ ← ← · ← ← ← ↓

Downs के अनुसार [मनुष्य जिस पर्यावरण का उपयोग करता है जो मस्तिष्क में बनाने के लिए व्यक्तित्व, सभ्यता, विश्वास और ज्ञानात्मक चरों के परिणाम स्वरूप पर्यावरण द्वारा सूचनायें आती हैं। अर्थात मनुष्य जिस पर्यावरण में रहता है उसके मस्तिष्क में